भारत में बंधुत्व

प्रलिमि्स के लयि:

प्रस्तावना, 42वाँ संशोधन अधनियिम, मौलकि कर्त्तव्य, संवधिान सभा

मेन्स के लयि:

बंधुत्व का अर्थ, बंधुत्व के आदर्शों को प्राप्त करने की चुनौतयिाँ

स्रोत: द हदि

चर्चा में क्यों?

बंधुत्व, भारतीय संवधिान में नहिति मूल मूल्यों में से एक है, जो समाज में एकता और समानता को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिाता है। हालाँकि भारत में बंधुत्व का व्यावहारकि अनुप्रयोग कई प्रश्न और चुनौतयिाँ उत्पन्न करता है।

बंधुत्व की अवधारणा की उत्पत्ति:

- **प्राचीन ग्रीस:**
  - बंधुत्व, भाईचारे और एकता के वचिार का एक लंबा इतहिास है।
  - प्लेटो के लसिसि में दार्शनकि ज्ञान **प्राप्त करने की तीव्र इच्छा के लयि फलियि (प्रेम) शब्द का आह्वान कयि गया है।**
    - इस संदर्भ में भाईचारे को दूसरों के साथ ज्ञान और बुद्धमित्ता साझा करने की प्रबल इच्छा के रूप में देखा जाता था, जसिसे बौद्धकि आदान-प्रदान के माध्यम से दोस्ती अधकि सार्थक हो जाती थी।
- **अरस्तू का वचिार:**
  - यूनानी दार्शनकि, अरस्तू ने **"पोलसि"** के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बंधुत्व के वचिार को जोड़ा,**शहर-राज्य जहाँ व्यक्ति राजनीतकि प्राणयिों के रूप में थे** और शहर-राज्य (पोलसि) में नागरकिों के बीच मत्रिता महत्त्वपूर्ण है।
- **मध्य युग:**
  - मध्य युग के दौरान बंधुत्व ने एक अलग आयाम ले लयि, **मुख्य रूप से यूरोप में ईसाई संदर्भ में।**
    - यहाँ बंधुत्व अक्सर **धार्मकि और सांप्रदायकि बंधनों** से जुड़ा होता था।
    - इसे साझा **धार्मकि मान्यताओं और प्रथाओं** के माध्यम से बढ़ावा दयि गया, जसिमें आस्तकि/वशि्वासयिों के बीच बंधुत्व की भावना पर ज़ोर दयि गया।
- **फ्राँसीसी क्रांति:**
  - वर्ष 1789 में फ्राँसीसी क्रांति, जसिने **प्रसद्धि आदर्श वाक्य "लबिर्टे, एगलटि, फ्रेटरनटि" (स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व)** को जन्म दयि।
    - इसने **स्वतंत्रता और समानता के साथ-साथ राजनीति के क्षेत्र में बंधुत्व** की शुरुआत को चह्निति कयि।
      - **इस संदर्भ में बंधुत्व, नागरकिों के बीच एकता और एकजुटता के वचिार का प्रतीक है क्योंकि वे अपने अधकिारों तथा स्वतंत्रता के लयि लड़ते हैं।**

भारत में बंधुत्व की अवधारणा:

- **भारत के समाजशास्त्र** के अंदर भारतीय बंधुत्व की अपनी यात्रा है और भारतीय बंधुत्व की वर्तमान प्रकृति इसके संवधिान में वर्णति राजनीतकि बंधुत्व से अलग है।
- **भारत में स्वतंत्रता और समानता के साथ-साथ बंधुत्व एक संवैधानकि मूल्य है, जसिका उद्देश्य सामाजकि सद्भाव तथा एकता प्राप्त करना है।**
  - भारतीय संवधिान के नरि्माताओं ने **पदानुक्रमति सामाजकि असमानताओं** से ग्रस्त समाज में बंधुत्व के महत्त्व को पहचाना।

- डॉ. भीम राव अंबेडकर ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की अविभाज्यता पर बल दिया तथा इन्हें भारतीय लोकतंत्र का मूलभूत सिद्धांत माना।
- **बंधुत्व से संबंधित संवैधानिक प्रावधान:**
- **प्रस्तावना:**
  - **प्रस्तावना** के सिद्धांतों में स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय के साथ-साथ बंधुत्व का सिद्धांत भी शामिल किया गया।
- **मौलिक कर्तव्य:**
  - मौलिक कर्तव्यों पर अनुच्छेद 51A को 42वें संशोधन द्वारा जोड़ा गया तथा 86वें संशोधन द्वारा संशोधित किया गया।
  - **अनुच्छेद 51A(e)** आमतौर पर प्रत्येक नागरिक के कर्तव्य को संदर्भित करता है जो 'भारत के सभी लोगों के मध्य सद्भाव तथा समान भाईचारे की भावना को बढ़ावा देता' है।

भारतीय संदर्भ में बंधुत्व की सीमाएँ एवं चुनौतियाँ:

- **सामाजिक और सांस्कृतिक अंतर:**
  - भारत की विविध संस्कृतियों तथा परंपराओं के कारण **विभिन्न समुदायों के मध्य भ्रांति/मिथ्या बोध एवं संघर्ष की स्थिति उत्पन्न** हो सकती है।
    - **धार्मिक अथवा** जाति-आधारित मतभेदों के परिणामस्वरूप अमूमन अविश्वास, भेदभाव और यहाँ तक कि हिंसा भी होती है, जिससे बंधुत्व खतरे में पड़ सकता है।
    - **धार्मिक असहिष्णुता अथवा संघर्ष** की घटनाएं सामाजिक लगाव और एकता को बाधित कर सकती हैं, जिससे बंधुत्व की भावना को प्रोत्साहन नहीं मिलता है।
      - इस देश में धार्मिक अल्पसंख्यकों को अनगिनत बार ऐसे सामाजिक और राजनीतिक तिरस्कार का सामना करना पड़ा है।
- **आर्थिक असमानताएँ:**
  - समाज के **विभिन्न वर्गों के बीच आर्थिक असमानता**, असंतोष और भेदभाव की भावनाओं को जन्म दे सकती है।
  - जब लोग अपनी सफलता में आर्थिक बाधाओं को महसूस करते हैं, तो वे सहयोग करने में झिझक सकते हैं, जिससे भाईचारे के एक प्रमुख तत्त्व, सामाजिक एकजुटता में बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- **राजनीतिक मतभेद:**
  - **राजनीतिक विचारधाराएँ समाज में गहन विभाजन की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं** तथा सहयोग एवं संवाद में बाधा डाल सकती हैं।
  - इस तरह के मतभेद अमूमन **ध्रुवीकरण** की स्थिति उत्पन्न कर शत्रुता और असहिष्णुता के माहौल को बढ़ावा देते हैं जो सकारात्मक सहभागिता में बाधा डालता है।
- **विश्वास की कमी:**
  - **समूहों के बीच आपसी विश्वास और समझ** की कमी भाईचारे को कमज़ोर कर सकती है।
  - जब विश्वास की कमी होती है, तो सामान्य लक्ष्यों की दिशा में एकजुट होकर काम करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **संवैधानिक नैतिकता की विफलता:**
  - भारतीय संवैधानिक मूल्यों पर आधारित संवैधानिक नैतिकता, भाईचारा बनाए रखने हेतु महत्त्वपूर्ण है।
    - इसकी विफलता से **संस्थानों और कानून के शासन में विश्वास** की कमी हो सकती है जिससे **अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है तथा भाईचारा कमज़ोर हो सकता है।**
- **अपर्याप्त नैतिक व्यवस्था:**
  - मूल्यों और सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना तथा समाज में एक कामकाज़ी नैतिक व्यवस्था का होना अति आवश्यक है ।
  - इस क्षेत्र में विफलता के परिणामस्वरूप भाईचारे की स्थिति बिगड़ सकती है तथा अनैतिक कार्यों से नागरिकों के बीच अविश्वास उत्पन्न हो सकता है।
- **शैक्षिक असमानताएँ:**
  गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच में असमानता **सामाजिक असमानताओं की स्थिति को बरकरार रख सकती है और भाईचारे में बाधा डाल सकती है।**
- शैक्षिक असमानताओं के परिणामस्वरूप अमूमन असमान अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे समुदायों के बीच विभाजन की स्थिति बनती है।
- **क्षेत्रीय असमानताएँ:**
  - भारत की व्यापक भौगोलिक व क्षेत्रीय विविधता आर्थिक विकास एवं बुनियादी ढाँचे में असमानताएँ उत्पन्न कर सकती है।
  - ये **क्षेत्रीय असमानताएँ** कुछ समुदायों में हाशिये पर होने की भावना उत्पन्न कर सकती हैं, जिससे **भाईचारे को बढ़ावा देने के प्रयासों को चुनौती** उत्पन्न हो सकती है।
- **भाषा और सांस्कृतिक बाधाएँ:**
  - भारत की **भाषाओं और बोलियों की बहुलता कभी-कभी संचार बाधाएँ** उत्पन्न कर सकती हैं।
    - भाषा और सांस्कृतिक मतभेद प्रभावी संवाद और सहयोग में बाधा डाल सकते हैं, जिससे भाईचारे की भावना प्रभावित हो सकती है।

आगे की राह

- विभिन्न समुदायों के बीच **सामाजिक और सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा** देने वाली पहल मतभेदों को दूर करने तथा भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने के लिये आवश्यक हैं। इन कार्यक्रमों को विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के बीच संवाद, समझ एवं सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिये।
- **नागरिक शिक्षा** में छोटी उम्र से ही **बंधुत्व, समानता** और **सामाजिक न्याय के मूल्यों को स्थापित** किया जाना चाहिये। ज़िम्मेदार नागरिकता और नैतिक आचरण का उदाहरण स्थापित करने के लिये समाज के सभी स्तरों पर नैतिक नेतृत्व आवश्यक है।
- **धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान** को प्रोत्साहित करना महत्त्वपूर्ण है। अंतर-धार्मिक संवाद, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों के लिये सुरक्षा तथा सहिष्णुता की संस्कृति को बढ़ावा देने से सामाजिक एकता बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

- नैतिक आचरण और ज़िम्मेदार नागरिकता का उदाहरण स्थापित करने के लिये समाज के सभी स्तरों पर नैतिक नेतृत्व को प्रोत्साहित करना चाहिये।
- ऐसी **नीतियाँ और कार्यक्रम लागू करने चाहिये जो आर्थिक असमानताओं को कम कर सकें, उनका समाधान करें,** सभी नागरिकों के लिये अवसरों और संसाधनों तक समान पहुँच सुनिश्चित करें।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. निम्नलिखित उद्देश्यों में से कौन-सा एक भारत के संविधान की उद्देशिका में सन्निविष्ट नहीं है? (2017)

(a) विचार की स्वतंत्रता
(b) आर्थिक स्वतंत्रता
(c) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
(d) विश्वास की स्वतंत्रता

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- भारत के संविधान की प्रस्तावना हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये तथा इसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म एवं उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिये तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा एवं राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लये दृढ़संकल्पित होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।
- प्रस्तावना में आर्थिक स्वतंत्रता शामिल नहीं है।
- **अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।**

?????:

प्रश्न. 'उद्देशिका (प्रस्तावना)' में शब्द 'गणराज्य' के साथ जुड़े प्रत्येक विशेषण पर चर्चा कीजिये। क्या वर्तमान परिस्थितियों में वे प्रतिरिक्षणीय हैं? (2016)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/fraternity-in-india